Department of sanskrit

Programme outcomes :-

B.A.(Sanskrit):-

विय्दाथ्रथयंो को सं्सकृ.1 त भाषा केकाय्वर्ग्रथंो,य्वाकरण ,छंद-अलंकार आदद केबुवनयादी ्सतर

की र्पावि तादक ि भाषा एिं सावह्तय दोनंो को समझ लिे।

सं्सकृ.2 तसावह्तय केवतहास केपूणण्ज्ञान की र्पावि तादक विय्दाथी सं्सकृत्गंथो से पररवचत होि।

भारतीय सं्सकृ .3 वत, भारतीय परंपरांओ तथा नैवतक मूलयंो का विकास।

M.A.(Sanskrit):-

विद््याथी सं्सकृ.1 त मा्धयम से अ्धययन करतेहुए न के िल सं्सकृत का सै्दांवतक अवपतु व्यिहारररक

ज्ञान र्पिा करते हं।सं्सकृत संभाषण कौशल का विकास करतेहुए सं्सकृ त का संभाषण की

भाषा(Language of conversation)के रूप मंे विकास।

प्राचीन सं्सकृ.2 त गंथंो मंे वनवहत ज्ञान का अजणन कर भारतीय सं्सकृवत एिं परांओ का अ्धययन।

साथ ही सं्सकृ त केआधुवनक कवियो का अ्धययन कर सं्सकृत के निीन सावह्तय का ज्ञान र्पिा करना।

विद््याथ्रथयंो मंे नैवतक मूलयंो का विकास।.3

प्राचीन एिं.4 आधुवनक सं्सकृत ग्रंथ,भाषाशात्र्स आदद विषयंो से संबंवधत शोध कायण को बढ़ािा।

Programme specific outcomes:-

B.A(Sanskrit):-

सं्सकृ.1 त के प्राचीन ग्रंथंो का बुवनयादी अ्धययन।

काय्व वनमाणण के.2 मह्त्ति त्थयंो यथा-छनद,अलंकार आदद का बुवनयादी अ्धययन।

वशष्कक, सेना मंे.3 धमणगुर, पुरोवहत आदद के रूप मंे रोजगार के अिसर।

नैवतक मूलयंो का विकास।.4

M.A.(Sanskrit):-

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)

सं्सकृ.1 त केप्राचीन ग्रंथंो तथा भारतीय पर्मपराओ के विवभन्न पहलुंओ का आधुवनक परर्पृेष्कय अ्धययन।

भाषाशार्त्सीय शोध के.2 अिसर।

योगविज्ञान, भाषाशार्त्स,आधुवनक सं्सकृ.3 त कवि पररचय आदद विषय सं्सकृी आधुवनक पररर्पेृष्कय मंे

उपयोवगता वस्द करते हंैै।

विष्कक,भाषीौज्ञावनक, सेना मंे.4 धमणगुर, पुरोवहत, लेखक आदद ष्केत्रीमंगार के अिसर।

Course outcomes:-

B.A. Part 1:-

व्याकरण का परिं.1 वभक अ्धययन करसेे विय्दाथ्रथयंो का भाषा पर अवधकार ्सथावपत होता है।

नीविपरक ग्रंथंो यथा-वहतोपदेश आदद के.2 अ्धययन से नैवतक मूलयंो की ्सथापना।

संस्कृ.3 तसावहतय केइवतहास केअ्धययन केमा्धयम सेविय्दाथ्रथयंो का सं्सकृग्रंथंो सेपररचय।

B.A. Part 2:-

व्याकरण के .1 अवर्गम ्सतर का अ्धययन।

ि्कय रचना का अ्भयास वजससे.2 सं्सकृत लेखन कौशल का विकास।

नागानंद, नीवतशतक जैसे.3 ग्रनथंो केअ्धययन से नैवतक मूलयंो का विकास।

सं्सकृ.4 तसावहतय केइवतहास केअ्धययन सेविय्दाथ्रथयंो का सं्सकृग्रंथंो सेपररचय।

B.A. Part 3:-

काव्य वनमाणण के.1 महत्तिपूणण्थयंो जैसेछं द,अलंकार आदद का बुवनयादी अ्धययन।

संस्कृ.2 त वनबंध कौशल मंवृिद्ध।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)

M.A. 1st semester :-

िद,उपवनषद इतयादद ज्ञान सेप1ररपूणणग्रनथंो का अधययन।

पाली जैसी महत्तिपूणण.2भाषाओ के अधययन सेभाषाशास्त्रीय शोध के आयामंो मंवृिद्ध।

श्रीमभ्दगितगीता एिं.3 दशणन का अधययन आधयाव्तमक उन्नवत की ओर अर्गसर करता है।

सावहतयशार्त्स एिं.4काव्य विषयंो पर विय्दाथ्रथयंो की ज्ञान वृिद्ध होनेसे संस्कृ त सावहतय लेखन कु शलता मंवृिद्ध होती है।

M.A. 2nd semester :-

िद तथा िदाङ्ग इतयादद ज्ञान से.1पररपूणणग्रनथंो का अधययन।

भाषिज्ञावनक के.2 रूप मंरोजगार के अिसर की प्राि।

दिशन के.3 अधययन सेविय्दाथ्रथयंो मंअधयाव्तमक ज्ञान की िृद्धि तथा योग जैसे ितणमान युग के प्रासंवगक पष्क की ज्ञानप्राि ।

संस्कृ.4त सावहतय लेखन कु शलता मंवृिद्ध।

M.A. 3rd semester :-

भारतीय संस्कृ.1 वत के विवभन्न पहलुंओ की ज्ञान प्राि।रामायण, महाभारत, पुराण जैसेभारतीय संस्कृत के आधार स्तमभ माने जाने िाले ग्रनथंो का ज्ञान।

काव्यशार्त्स, सावहतयशार्त्स तथा रस-धि्वन आदद काव्यशास्त्रीय तथ्यंो के.2ज्ञान से संस्कृत सावहतय लेखन कु शलता मंवृिद्ध।

कौटिलीय अथणशार्त्स जैसे.3 ग्रनथंो का अध्ययन आथ्रथक, राजनैवतक आदद षिेत्र मं संस्कृत के महत्ि का ज्ञान प्रदथ्रशत करते हंै।

M.A. 4th semester :-

भारतीय सं्सक्.1 वत केवि्सतृत ज्ञान की र्पावि ।

सं्सक् .2 त केआधुवनक कवियं ो केअ्धययन केमा्धयम सेसं्सक्ृ की ितणमान र्पासंविकता वियदा्रथयं ो का पररचय।

छिीसगढ़ के .3 धाथ्रमक ्सथलं ो केपररचय की र्पावि।

काव्यशार्त्स, सावहत्यशार्त्स तथा रस-्धिवन आदद काव्यशार्त्सीय ग्रथयं ो के ्ञान .4 से सं्सकृत सावहत्य लेखन

कु शलता मेंर्िृव्द।

कौरिलीय अथणशार्त्स जैसे ग्रथयं ो का अ्धययन आथ्रथक, राजनैवतक आदद षेकत्रं ो मेंसं्सकृत के महत्ि का ज्ञान

प्रदथ्रशत करते हं ै।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
क्र.
दि.
राजनांदगांव (छ.ग.)